लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे । हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा जय हिंद !

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(29वां अंक)

(01 अप्रैल, 2021 से 30 सितंबर, 2021 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्रीमती जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक
श्री एन वी मात्तच्चन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बीजु जोसफ
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्री एम ए राजन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्रीमती वल्सम्मा तोमस
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

श्री जोय पालयूर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्रीमती के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

संपादन सहयोग

श्रीमती एस संध्या
हिंदी अधिकारी

श्रीमती गेलीकृष्णा सी जी
हिंदी अधिकारी

श्रीमती निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री भारत भूषण
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	हिंदी दिवस, 2021 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	
2.	संरक्षक की कलम से.....	
3.	मुख्य संपादक की कलम से.....	
4.	संपादक मंडल की ओर से	
5.	राष्ट्रीय युद्ध स्मारक	
6.	भारत की आज़ादी के 75 वर्ष	प्रभात रंजन, कनिष्ठ अनुवादक
7.	मुरझाए फूल – कहानी	राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी
8.	हिंदी पखवाड़ा समारोह-2021 के दौरान आयोजित कविता रचना प्रतियोगिता में “मित्र” शीर्षक पर विभिन्न प्रतिभागियों की रचनाएँ	
(i)	मेरी ज़िंदगी के कोहिनूर हैं मेरे दोस्त	अंतमा यादव, लेखाकार
(ii)	दोस्ती बचपन की	कल्पना यादव, लेखाकार
(iii)	एक दुनिया मेरी हथेली के भीतर	राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी
(iv)	दोस्ती का रिश्ता	तंकच्चन टी, वरिष्ठ लेखाकार
(v)	सच्चा मित्र	शांति के, सहायक लेखा अधिकारी
(vi)	कार्यालय मेरा प्रिय मित्र	विद्या मोहनलाल पी, वरिष्ठ लेखाकार

(vii)	पुस्तक मेरी मित्र	आन्ड्रिया लुइस, वरिष्ठ लेखाकार
(viii)	कीमती मित्र	शोभना कुमारी वी आर, वरिष्ठ लेखाकार
(ix)	साथी	लतिकेश्वरी पी ए, सहायक पर्यवेक्षक
9.	बैसाखी-इतिहास के दर्पण में	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
10.	नमामि गंगे	उज्ज्वल सुरेश, सुपुत्र रोहिणी के आर
11.	हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021 – संक्षिप्त विवरण	
12.	हिंदी पखवाडा समारोह-2021 के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची	
13.	महिला सशक्तिकरण	एल प्रभा, सहायक लेखा अधिकारी
14.	01.04.2021 से 30.09.2021 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	

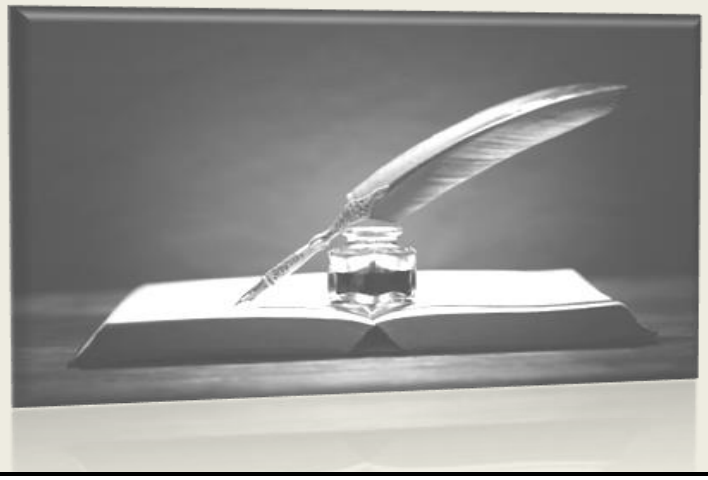

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी दिवस 2021

के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), केरल

संरक्षक की कलम से .....

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल के कार्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 29वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधताएं भारत की विशेषता है। इस भाषायी विविधता के बीच देश की एकता कायम रखने के लिए संपर्क भाषा के रूप में व्यापक रूप से हिंदी का प्रयोग किया जाता है। हमें सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना जारी रखना चाहिए। मुझे विश्वास है कि सरकारी काम-काज में आसान हिंदी का प्रयोग किए जाने से हिंदी भाषा की स्थिति और अधिक सुदृढ़ होगी।

हमारा कार्यालय राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाता आ रहा है। इसी क्रम में हर वर्ष कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "श्रुति" का प्रकाशन किया जाता है। "श्रुति" के 29वें अंक का प्रकाशन सफल बनाने में अपना योगदान देनेवाले कर्मचारियों/अधिकारियों को और पत्रिका के संपादक मंडल को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ।

"श्रुति" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

तिरुवनंतपुरम

सुधर्मिनीजी

(जी सुधर्मिनी)
प्रधान महालेखाकार

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एन वी मात्तच्चन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से ....

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 29वें अंक का प्रकाशन हम सभी के लिए गर्व एवं आनंद का विषय है। हिंदी केवल संघ सरकार की राजभाषा ही नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य भी करती है। हमें हिंदी को बढ़ावा देने और उसका प्रचार-प्रसार करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रकट करने का अवसर प्राप्त होता है।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल को, रचनाकारों को और पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देनेवाले सभी को धन्यवाद देता हूँ।

पत्रिका "श्रुति" की उत्तरोत्तर प्रगति और उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

तिरुवनंतपुरम

(एन वी मात्तच्चन)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादक मंडल की ओर से ....

हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" का 29वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अतीव हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। जैसा कि आप जानते हैं, भारत एक बहु भाषा-भाषी देश है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में और राष्ट्र में एकता लाने की दिशा में हिंदी ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की दूरदर्शिता थी कि उन्होंने हिंदी भाषा का प्रचार का श्रीगणेश दक्षिण भारत से किया। हिंदी भाषा ने पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक समस्त भारतीयों को भाषा के द्वारा एकता के सूत्र में बांधने का महान कार्य किया है। भारत के नागरिकों के रूप में हमारा कर्तव्य है कि राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा और राज्य स्तर पर प्रांतीय भाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग करके भारतीय भाषाओं को गौरवान्वित करें।

हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में निरंतर प्रगति हो रही है। हमारे वरिष्ठ अधिकारीगण और कर्मचारी वृंद के सहयोग से ही यह संभव हुआ है। इसी सहयोग के फलस्वरूप ही "श्रुति" का प्रकाशन संभव हो रहा है। "श्रुति" के प्रकाशन में हमारी आदरणीय प्रधान महालेखाकार महोदया की प्रेरणा एवं उनका मार्गदर्शन विशेष उल्लेखनीय हैं। उनके प्रति हम अपना आभार व्यक्त करते हैं। इसके प्रकाशन में जिन अधिकारियों और कर्मचारियों ने हमें सहयोग दिया है उन्हें हम धन्यवाद देते हैं और भविष्य में भी उनके भरपूर सहयोग की प्रार्थना करते हैं।

इस पत्रिका के बारे में अपने सक्रिय सुझाव भेजकर हमें अनुगृहीत करनेवाले सभी पाठकों को सादर धन्यवाद। आशा है कि आगे भी आप अपनी मूल्यवान प्रतिक्रियाओं से हमारे प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। हमारी यह पत्रिका "श्रुति" आपको पसंद आएगी इसी विश्वास के साथ "श्रुति" का यह अंक सादर प्रस्तुत है।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

संपादक मंडल

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक हमारे शहीद जवानों के लिए देश की श्रद्धांजलि है। देश के सशस्त्र बलों को सम्मानित करने के लिए भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली के इंडिया गेट के आसपास के क्षेत्र में यह स्मारक बनाया गया है। भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 25 फरवरी 2019 को इंडिया गेट के पास 44 एकड़ में बना राष्ट्रीय युद्ध स्मारक (नेशनल वॉर मेमोरियल) राष्ट्र को समर्पित किया। 25000 से अधिक शहीद सैनिकों के नाम यहाँ पत्थरों पर उत्कीर्ण हैं। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक हमारे उन सभी वीरों को श्रद्धांजलि देता है जो युद्ध में अपना बलिदान दे चुके हैं। 22 जनवरी 2022 को एक ऐतिहासिक कदम के तहत अमर जवान ज्योति का राष्ट्रीय युद्ध स्मारक ज्वाला में विलय हो गया है। इंडिया गेट पर अंकित नाम केवल कुछ शहीदों के हैं, जबकि वर्ष 1971, इसके पहले और बाद के युद्धों सहित सभी युद्धों के सभी भारतीय शहीदों के नाम राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में लिखे गए हैं।

इसमें मुख्य तौर पर चार संकेंद्रित वृत्त शामिल हैं, जिनका नाम है:

- 'अमर चक्र' या अमरता का चक्र,
- 'वीरता चक्र' या वीरता का चक्र,
- 'त्याग चक्र' या बलिदान का चक्र और
- 'रक्षक चक्र' या सुरक्षा का चक्र।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का प्रस्ताव पहली बार 1960 के दशक में बनाया गया था। यह स्मारक उन सैनिकों को समर्पित है, जिन्होंने वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध, वर्ष 1947, वर्ष 1965 तथा वर्ष 1971 में भारत-पाक युद्धों, श्रीलंका में भारतीय शांति सेना अभियानों और वर्ष 1999 में कारगिल संघर्ष के दौरान देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक उन सैनिकों

को भी याद करता है, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन, मानवीय सहायता, आपदा राहत संचालन, आतंकवाद विरोधी अभियान और कम तीव्रता वाले संघर्ष संचालन में भाग लिया और सर्वोच्च बलिदान दिया, उनमें 1947-48 के कश्मीर युद्ध, 1962 के चीनी हमले, 1965 के भारत-पाक युद्ध, कारगिल आदि से लेकर लद्दाख की गलवान घाटी तक में बलिदान देनेवाले सभी शहीद शामिल हैं।

भारत की आजादी के 75 वर्ष

प्रभात रंजन
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारत ने 15 अगस्त 2021 को अपना 75वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। वर्षगांठ के लिए वैश्विक समारोह औपचारिक रुप से 12 मार्च 2021 को 75 सप्ताह के उत्सव के साथ शुरु की गयी थी जिसे "आजादी का अमृत महोत्सव" कहा जाता है। भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है, इन 75 वर्षों में भारत की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में भारत की विकास गाथा प्रभावशाली रही है इनमें कृषि उत्पादन, परमाणु और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, सस्ती स्वास्थ्य व्यवस्था, विश्वस्तरीय शैक्षणिक संस्थान, आयुर्वेद, जैव प्रौद्योगिकी, विशाल इस्पात संयंत्र, आईटी शक्ति और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी स्टार्ट-अप इकोसिस्टम बनने तक इत्यादि शामिल है।

महात्मा गांधी और अन्य महान नेताओं के नेतृत्व में एक अहिंसक स्वतंत्रता आंदोलन के माध्यम से एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत का जन्म वास्तव में अद्वितीय था। हमारे संस्थापक पिताओं और माताओं द्वारा एक जीवंत लोकतांत्रिक राजनीति की स्थापना और पिछले साढ़े सात दशकों में उन लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करना भारत की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक रहा है। भूगोल, भाषा, धर्म, संस्कृति और जातीयता की दृष्टि से भारत की महान विविधता को देखते हुए विकास, समृद्धि और स्थिरता की ओर देश की यात्रा प्रेरणा

की कहानी है। मजबूत लोकतांत्रिक संस्थान, व्यापक रूप से सम्मानित चुनावी निकाय, कानून का शासन, एक सशक्त मीडिया और एक जीवंत नागरिक समाज ने आज भारत में जो योगदान दिया है, उसी से आज का भारत बना है। भारत में शासन की विकेंद्रीकृत प्रणाली के माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्य जमीनी स्तर तक पहुंच गया हैं जिसकी शुरुआत ग्राम परिषदों या पंचायती राज संस्थानों से होती है।

लोकतंत्र ने यह सुनिश्चित किया है कि भारत के हर समूह के लोगों का प्रतिनिधित्व भारत के लगभग हर क्षेत्र के कार्यालयों के उच्चतम स्तरों पर किया जाता हो। महिला नेताओं को भारतीय संसद के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और अध्यक्ष और भारत के कई बड़े राज्यों के मुख्यमंत्रियों के रूप में चुना गया है। आजादी के बाद से, महिलाएं नौकरशाही, पुलिस, सशस्त्र बल में लड़ाकू भूमिकाओं के साथ-साथ अंतरिक्ष और परमाणु वैज्ञानिकों और प्रमुख फर्मों के सीईओ के रूप में काम कर रही हैं। सकारात्मक कार्रवाई ने समाज के सभी वर्गों को उच्च शिक्षा, सरकारी नौकरियों तक पहुंच बनाने और सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में नेतृत्व के पदों पर कब्जा करने में सक्षम बनाया है। हम अपने 5,000 वर्षों के निरंतर इतिहास के प्रति सचेत भी हैं और इसके साथ-साथ हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी समकालीन उपलब्धियों पर गर्व भी है। वास्तव में, भारत का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम लंबे समय से चला आ रहा है, जिसका सुरक्षा और अप्रसार दोनों में एक प्रभावशाली रिकॉर्ड है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में, भारत ने चंद्रयान (चंद्रमा अन्वेषण मिशन) और मंगलयान (मार्स ऑर्बिटर मिशन) को सफलतापूर्वक लॉन्च किया है।

स्वतंत्र भारत की उपलब्धियां बहुत अधिक हैं जिनमें 1.35 अरब से अधिक आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने वाली हरित क्रांति, उन्हें सूचना का अधिकार, न्यूनतम राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना और हाल ही में, जैम ट्रिनिटी (लोगों के बैंक खातों और मोबाइल नंबरों के साथ आधार को जोड़ना या जन धन के साथ-साथ सभी निवासियों को विशिष्ट पहचान संख्या जारी करना) और आयुष्मान भारत जो कि एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम है शामिल है।

सबसे बढ़कर हमारे पास एक उल्लेखनीय संविधान है जो 1950 में अपनाए जाने के बाद से समय की कसौटी पर खरा उतरा है। 2021 का भारत एक आधुनिक दृष्टिकोण और वसुधैव कुटुम्बकम या "दुनिया एक परिवार है" में दृढ विश्वास वाला एक आश्वस्त राष्ट्र है। 1947 में, भारत एक बड़ी गरीब आबादी वाला देश था जो कि नवेली उद्योग और भोजन की कमी से पीड़ित था तब हमारी सबसे बड़ी चुनौतियाँ राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र निर्माण की थीं। फिर भी, भारत ने विश्व मंच पर एक प्रमुख भूमिका निभाई। आजादी से पहले भी, भारत ने पहले एशियाई संबंध सम्मेलन की मेजबानी की जो बांडुंग सम्मेलन का अग्रदूत था। एक नए स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिए उपनिवेशवाद को समाप्त करने का समर्थक बन गया और सत्ता के

गुटों के साथ गठबंधन करने से बच गया। भारी उद्योग, वैज्ञानिक अनुसंधान के केंद्र और उच्च शिक्षा संस्थानों की नींव रखी गई।

लोक कल्याण और भारतीय समाज का समग्र विकास और अर्थव्यवस्था शासन के मार्गदर्शक सिद्धांत बने हुए हैं। कोविंड -19 महामारी के कारण एक बड़े आर्थिक प्रोत्साहन कार्यक्रम के साथ-साथ, भारत सरकार ने पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) के माध्यम से 800 मिलियन भारतीयों को शामिल करने वाले प्रति व्यक्ति 5 किलोग्राम अनाज का राहत पैकेज जारी किया। 2021 का भारत क्रय-शक्ति क्षमता (पीपीपी) के मामले में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। इसका एक वैश्विक दृष्टिकोण और वैधिक आकांक्षाएं हैं। यह एक पुनरुत्थानवादी भारत है। ऐसा न हो कि हम भूल जाएं कि लगभग दो सहस्राब्दियों तक भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक था। 7वीं शताब्दी के अंत में इसका हिस्सा वास्तव में विश्व अर्थव्यवस्था का एक चौथाई था। 2021 का भारत एक आत्मनिर्भर भारत है। यह एक ऐसे भारत का प्रतीक है जो मजबूत स्थिति से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भाग लेना चाहता है।

भारत एक प्रमुख वैक्सीन उत्पादक देश है। भारत दो कोविड-19 टीकों का उत्पादन करता है – कोविशील्ड (एस्ट्राजेनेका) और स्वदेशी रूप से विकसित कोवैक्सिन। भारत में लगभग 500 मिलियन टीके लगाए जा चुके हैं। भारत ने अपनी वैक्सीन मैत्री (या मैत्री) पहुँच के माध्यम से दुनिया भर के देशों को 66 मिलियन टीके की आपूर्ति की है। महामारी के बाद से भारत ने 150 से अधिक देशों को आवश्यक दवाओं की आपूर्ति भी की है।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021 के दौरान आयोजित पोस्टर डिसाइनिंग प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त पोस्टर

पोस्टर डिसाइनिंग प्रतियोगिता के लिए प्राप्त कुछ अन्य प्रविष्टियाँ

आन्ड्रिया लुइस, वरिष्ठ लेखाकार

बेसिल ए ज़करिया, वरिष्ठ लेखाकार

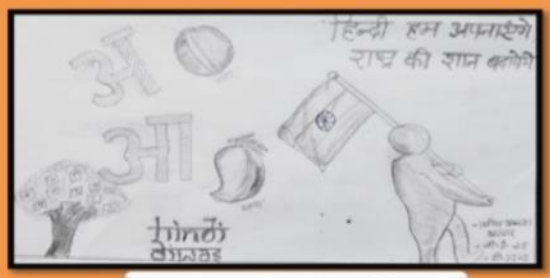

ओम प्रकाश खरवार, डीईओ

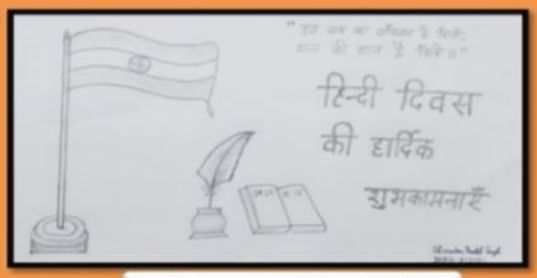

शिवेन्द्र प्रताप सिंह, डीईओ

सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी

तंकच्चन टी, वरिष्ठ लेखाकार

जिनु अब्रहाम, वरिष्ठ लेखाकार

मुरझाए फूल - कहानी

राजी राजन
सहायक लेखा अधिकारी

सोमवार की सुबह तेज धूप थी और सूरज की किरणें जोर पकड़ रही थीं। उस समय बस स्टैंड पर असामान्य रूप से भीड़ थी। दूर की मीनार घड़ी में 10 मिनट से 9 बज रहे थे और कार्यालय तक का मेरा सफर 15 मिनट दूर था। जैसे ही मैं अपनी बस पकड़ने की जल्दी में था, फुटपाथ के पास पड़े एक युवक ने मेरी आँखें बंद कर लीं। क्या वह मर चुका था? या नशे में? या बीमार? कई विचार मेरे दिमाग को पार कर गए। उसने जर्जर कपड़े पहने थे और उसके चेहरे पर गंदगी के धब्बे बता रहे थे कि उसने कई दिनों से स्नान नहीं किया है। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि सूखे फूलों का एक गुच्छा था जिसे उसने अपने सीने पर रखे हाथ में कसकर पकड़ रखा था। वह 25 से अधिक नहीं लग रहा था, लगभग मेरे बेटे की उम्र। क्या मैं उसके लिए कुछ कर सकता हूँ? अचानक ऑफिस में पंचिंग मशीन और मेरे बॉस का गुस्सा भरा चेहरा दिमाग में आया और मैं उनके पास से निकल गया।

लेकिन, भीतर से किसी ने मुझे रुकने के लिए कहा, और जल्द ही संडे स्कूल में पढ़ाए जाने वाले गुड सेमेरिटन की कहानी मेरे दिमाग में दौड़ती हुई आई। पुजारी और लेवी, मानवता के ऊपर मंदिर में अनुष्ठानों को प्राथमिकता देते हुए घायल व्यक्ति के पास से गुजरे थे। और अंदर से एक ने सवाल किया "क्या आप वही नहीं दोहरा रहे हैं?" हां, मैं भी ऑफिस की ड्यूटी का ख्याल सबसे पहले दिमाग में लेकर बेहोश आदमी के पास से गुजरा था। मैंने अपने चलने पर ब्रेक लगा दिया और उस आदमी की मदद करने के लिए कुछ करने के लिए पीछे हट गया। वापस चलते समय, मैं इस तरह की गतिविधियों में शामिल होने के परिणामों के बारे में चिंतित था। मेरे दिमाग में अस्पताल, पुलिस थाने और कोर्ट, सभी जगहों की तस्वीरें आ रही थीं, जिनसे मैं डरती थी। मैंने बस स्टॉप पर ट्रैफिक पुलिस या किसी की मदद लेने के बारे में सोचा, लेकिन यह व्यर्थ था।

जब मैं उनके पास आया, मैंने महसूस किया कि वह सांस ले रहे हैं और इसलिए 108 पर डायल किया। वे कुछ ही समय में पहुंचे और उस व्यक्ति के बारे में पूछा जिसने उन्हें फोन किया था। जैसे ही उन्होंने उसे स्ट्रेचर पर और एम्बुलेंस में उठाया और मुझे उसके साथ जाने के लिए मजबूर किया गया। हालाँकि, उसने

अपनी आँखें नहीं खोलीं, उसके होंठ कुछ गुनगुनाने की कोशिश कर रहे थे। क्या यह 'मम्मा' था? मैं समझ नहीं पाया, लेकिन यह मेरे दिल की गहराई में कहीं छू गया। मुरझाए हुए फूल अभी भी हाथ में जकड़े हुए थे जिनके लंबे गंदे नाखून थे।

बहुत पहले, मैं मेडिकल कॉलेज अस्पताल की आपात वार्ड के बाहर लकड़ी की बेंच पर बैठा था, जिसमें एक बदबूदार स्लिंग बैग था, जिसे उन्होंने पहना था और सूखे फूलों का गुच्छा, जिसे अस्पताल के लोगों ने मुझे सौंप दिया था। उस गुच्छ के गुलाब भले ही मुरझा गए हों, फिर भी उनमें सुगंध थी और मुझे कुछ ऐसे लोगों की याद आ गई, जो अपने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाए रखते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता गया मेरी जिज्ञासा ने मुझे उसके छोटे से गोफन बैग की जांच करने के लिए मजबूर किया। बैग में केवल एक छोटी सी डायरी थी जिसे पॉलिथीन पेपर और कैप रहित रीफिल पेन में बड़े करीने से ढका गया था।

डायरी में साफ-सुथरे लिखे नोटों को खंगालते हुए उस गुमनाम युवक की जिंदगी चलचित्र की तरह मेरे बीच से गुज़र गई। वह बचपन में एक आज्ञाकारी लड़का था, लेकिन बाद की किशोरावस्था में, वह कुछ गैंगस्टरों के चंगुल में पड़ गया, जिन्होंने उसका ब्रेनवॉश किया। अपनी मां के आंसुओं और प्रार्थनाओं के बावजूद उन्होंने दुनिया की आज़ादी का आनंद लेने के लिए घर छोड़ दिया। लेकिन, आज वह कई वर्षों के बाद अपनी माँ के पास वापस जा रहा था।

मैंने डायरी में कुछ नाम या संपर्क नंबर खोजा, लेकिन कोई नहीं मिला। फिर मैंने कागज़ का एक छोटा सा टुकड़ा देखा, जिसे मोड़कर डायरी के कवर के नीचे रखा गया था। मैंने उत्सुकता से उसे खोला और उस पर एक लैंडलाइन नंबर मिला। मैंने सोचा कि यह किसका नंबर हो सकता है। वैसे भी कोशिश करने का फैसला किया। दो बार घंटी बजने से पहले, दूसरे छोर से एक कमज़ोर आवाज़ ने जवाब दिया "फिलिप, क्या

यह तुम हो बेटे?" मुझे यह जानकर वाकई हैरानी हुई कि इतने सालों बाद उस मां ने ऐसी कॉल की उम्मीद कैसे की थी। फोन करने के आधे घंटे के भीतर ही वह अस्पताल आ चुकी थी और मैंने उसे मुरझाए फूलों का गुच्छा सौंप दिया। जैसे ही उसने उन्हें अपनी छाती के पास रखा, आँसू उसके गालों पर लुढ़क गए। कुछ समय बाद, डॉक्टर ने उन्हें अपने बेटे से मिलने की अनुमति दी और उनके पुनर्मिलन की दृष्टि से मेरी आंखों में आंसू आ गई।

शाम को जब मैं अस्पताल से निकला तो उन्होंने कृतज्ञता में मेरे हाथ पकड़ लिए और मेरा दिल हल्का और प्रसन्न महसूस हुआ। मैं अपने प्रियजनों के साथ दिन की साहसिक कहानी साझा करने के लिए घर पहुंचने के लिए तरस रहा था। सूरज ढलने वाला था और सुनहरी किरणें चारों तरफ फैल गई थीं, जब मैं गली से अपने घर की ओर चल पड़ा। मैंने भगवान को उनकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया और सोचा कि उस दिन मेरे लिए वे मुरझाए फूल कैसे बदल गए थे।

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2021 के दौरान आयोजित कविता रचना प्रतियोगिता में "मित्र" शीर्षक पर विभिन्न प्रतिभागियों की रचनाएँ

मित्र

अंतमा
लेखाकार

मेरी ज़िंदगी के कोहीनूर है मेरे दोस्त,
कभी हँसाते है तो कभी रुलाते है,
कभी रुलाते है तो कभी मनाते है,
कुछ ऐसे टॉम एण्ड जैरी जैसे है मेरे दोस्त,
मेरी ज़िंदगी के कोहीनूर हैं, मेरे दोस्त।

खू

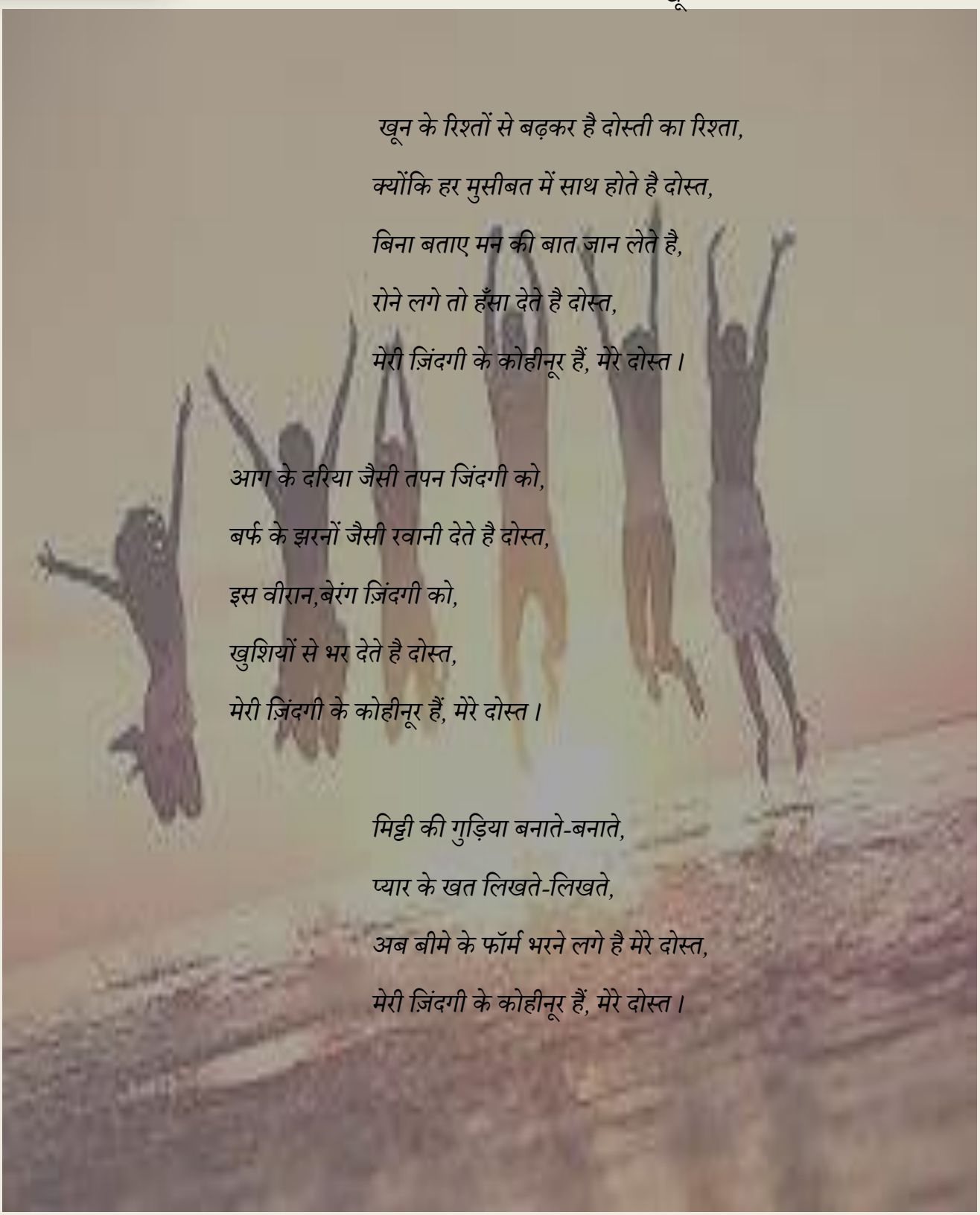

खून के रिश्तों से बढ़कर है दोस्ती का रिश्ता,

क्योंकि हर मुसीबत में साथ होते है दोस्त,

बिना बताए मन की बात जान लेते है,

रोने लगे तो हँसा देते है दोस्त,

मेरी ज़िंदगी के कोहीनूर हैं, मेरे दोस्त।

आग के दरिया जैसी तपन जिंदगी को,

बर्फ के झरनों जैसी रवानी देते है दोस्त,

इस वीरान,बेरंग ज़िंदगी को,

खुशियों से भर देते है दोस्त,

मेरी ज़िंदगी के कोहीनूर हैं, मेरे दोस्त।

मिट्टी की गुड़िया बनाते-बनाते,

प्यार के खत लिखते-लिखते,

अब बीमे के फॉर्म भरने लगे है मेरे दोस्त,

मेरी ज़िंदगी के कोहीनूर हैं, मेरे दोस्त।

मित्र

कल्पना यादव
लेखाकार

आपके मसरूफ जीवन से कुछ पल निकालते हैं,
चल ना, ऐ दोस्त बचपन की वो शरारतें फिर दोहराते हैं,
शाम को खेल कर देर से घर जाते है.,
माँ के डाँट लगाने पर, एक-दूसरे का नाम लगाते हैं,
एक दूसरे के खिलौनों से खेलते हैं,
अपना पराया सब भूल जाते हैं,
चल ना, ऐ दोस्त बचपन की वो शरारतें फिर दोहराते हैं।

हर चिंता परेशानी से दूर घंटों बतियाति हैं,
पड़ोस वाले घर से कच्चे आम चुराते हैं,
जीवन की भागदौड़ से दूर चले जाते हैं,
पैसा कमाने की होड़ से दूर चले जातें हैं,
एक दूसरे को दिल की सारी बातें बतातें हैं,
चल ना, ऐ दोस्त बचपन की वो शरारतें फिर दोहराते हैं।

एक-दूसरे से कितना दूर हो गए हम
ज़िंदगी की इस आपा-धापी में कहीं खो गए हम,
इस ज़िंदगी से थोड़ी मोहलत ले आते हैं,
परेशानियों से थोड़ी फ़ुरसत ले आते है,

पेड़ के नीचे बैठ कर, वही चूर्ण की गोलियां खातें हैं।
चल ना, ऐ दोस्त बचपन की वो शरारतें फिर दोहराते हैं।

बाकि सब बातें कुछ धुंधली-धुंधली सी याद हैं,
लेकिन तेरी हर छोटी-छोटी बात आज भी सबको बताते हैं,
चल ना, ऐ दोस्त बचपन की वो शरारतें फिर दोहराते हैं।

एक दुनिया- मेरी हथेली के भीतर

राजी राजन
सहायक लेखा अधिकारी

अभी कुछ महीने पहले की बात है
मैं आपसे परिचित हो गया।
लेकिन जीवन के उस छोटे से अंतराल में,
हैरानी की बात है कि तुम मेरा हिस्सा बन गये थे।
हर रात तुम मेरे साथ थे और जब भी मैं उठा,
आपकी टिमटिमाती आँखों को खुला देख कर हैरान रह गया।
और जब सुबह सुनहरी किरणें झाँकती हैं,
आपने पक्षियों की चहकती हुई संगीतमय आवाज़ से मुझे जगाया।

जहाँ भी गया आप मेरे साथ थे

और मेरे साथ सबसे मजेदार चुटकुले साझा किया

उन्होंने मुझे किनारे पर लहरों की तरह हँसाया

और उन्होंने मेरी आँखों में खुशी के आँसु ला दी।

आप वास्तव में एक विश्वकोश थे,

आपकी उंगलियों पर अपार ज्ञान है,

आपके पास हमेशा मेरे सभी सवालों का जवाब था

और सेकेंड के भीतर मुझे दुनिया भर में ले जा सकता है।

आपने मुझे पवित्र शब्दों से प्रसन्न किया

जब मैं उदास और थका हुआ था

आपने मेरे लिए सबसे मधुर गीत गाया

और आपने मेरी थकी हुई आत्मा को शांत कर दिया।

जब रात में मैंने सुनसान रास्तों को पार किया

रास्ता दिखाने के लिए आप मेरे साथ थे

आपकी उपस्थिति ने मेरे डर को दूर भगाया

और आपने मुझे हिम्मत दी जब किसी प्रिय का साथ

मानो जादू से आप मेरे पास वापस लाए हो

मेरे बचपन के दोस्त जो कभी मुझे प्यारे थे

इतने कम समय में आपने जो ध्यान आकर्षित किया है

अपने आसपास के लोगों को ईर्ष्या की पीड़ा भेजे।

लेकिन अचानक आप बीमार पड़ गये

और अपनी तारों वाली आँखें खोलने से इनकार कर दिया

आपको पुनर्जीवित करने के मेरे सारे प्रयास व्यर्थ थे।

आशा है आप अपनी बीमारी से ठीक हो जाएंगे

और जल्द ही मेरे साथ जुड़िए तरोताजा और मजबूत

ताकि मुझे खोई हुई दुनिया वापस लाने के लिए

और मेरी हथेली में रहो हमेशा के लिए।

मित्र

तंकच्चन टी
वरिष्ठ लेखाकार

मित्र होते हैं इस दुनिया में सबके
लेकिन तुम हो एक इंसान
मैं क्या कहूँ तुमको ?
ना मिला है तुम्हारा नाम
हैं कौन ? हर पल सोचता हूँ मैं तुमको

हर मुश्किल में तुम मिलते हो सबसे आगे

ना कोई थकान, न कुछ सोचना

ना कभी तुम मांगते अपने लिए

साथ हमेशा खड़े रहे हैं

मैं तो बोला हर पल मेरी दुःखी कहानी

तुमने सुना है गौर से मेरी बातें और बताया निपटना है कैसे

हर मोड़ पर तुम खड़े हो साथ मेरे

और बदला मेरे दिल का जलन

तुमने दिया है किरणों की आशा

दुःख और सुख निपट गए

उस अनमोल शब्द को ढूंढता रहा हूँ

कौन हो तुम बोलो मेरे भाई।

प्रेम और त्याग के धागे से जुड़ा

एक विश्वास हमारा रिश्ता |

दुनिया के हर रिश्तों में, सबसे खास है हमारा रिश्ता

दिल को दिल से जोड़नेवाला, एक प्यारा अहसास है

अब मैं सोच से निकलकर बोलूं

तुम हो मेरा मित्र हमेशा, तुम हो मित्र, मित्र हमेशा

मित्र

के शांति
सहायक लेखा अधिकारी

थाम ले हाथ जो संकट के अवसर पर
गिरने से जो बचाते वही है सच्चा मित्र।

तन से चाहे हो दूर पर मन से है करीब
समय पर जो काम आए वही है सच्चा दोस्त।

एक पवित्र रिश्ता है संभालना है जिसे
एक अमूल्य रत्न जो किसी कीमत पर खोना नहीं।

माँ-बाप भाई-बहन से छुप जाती जो बातें
दोस्तों के सामने खुलती है अपने आप।

हमारे संकट से दुखी, खुशी में जो खुश रहता
दोस्तों के मिलन से अजीब सा जोश फैलता।

मित्र एक वरदान है निसंदेह और निस्वार्थ
धन्य है उसका जीवन सच्चा मित्र जो पाता।

जीवन एक सागर सा सुख दुख की लहरें
दोस्ती का नांव जो सही दिशा दिखलाती।

कार्यालय मेरा प्रिय मित्र

विद्या मोहनलाल पी
वरिष्ठ लेखाकार

जब मैं जीवन के रास्ते में थक गयी थी

इस कार्यालय से अनमोल रिश्ता जुड गया था मेरा,

कई नए मित्रों की बारात मेरे जीवन में आ मिली

कार्यालय की रौनक मुझे भा गयी ।

इसके अलावा मुझे कौन सा मित्र मिलता

इस कार्यालय में मिली जुली धन्यता

मेरे मन को उज्ज्वलता से भर रही है

यही है मेरी मित्रता का संकल्प

।

पुस्तक मेरी मित्र

आंड्रिया लूयिस
वरिष्ठ लेखाकार

नहीं है धोखा देते किताब
जीवन के पथ खोल देते किताब ।

अच्छा रास्ता दिखाते ये मित्र
नये परिचय सिखाते ये मित्र ।

काबू करके पास रहते ये मित्र
भुला देते हमारी दुःख चिंता ।

हमें सुखसागर के भीतर ले जाते
और मन को शांति के तीर पर छोड़ देते ।

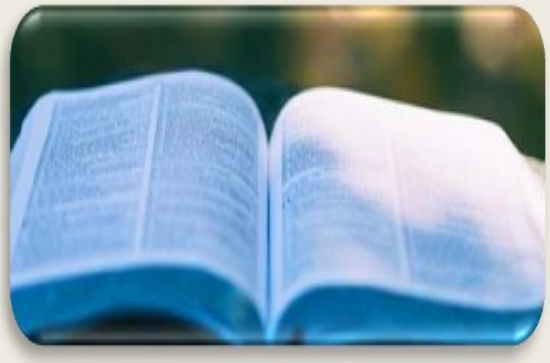

मित्र

शोभना कुमारी वी आर
वरिष्ठ लेखाकार

मित्र बहुत कीमती है

मिलते नहीं बाज़ार में

यह एक अनमोल रत्न है

जिसका मिलना नहीं आसान।

दोस्ती एक नाव है

जिससे आप दुख को पार करें

सच्चा साथी हमें मिले तो

उसे छोड़ना नहीं।

मित्र

लतिकेश्वरी पी ए
सहायक पर्यवेक्षक

हिंदी में सही मित्र शब्द है, दोस्त एवं साथी

रूसी में सही मित्र शब्द है, दुनिया एवं शांति

साथी माने मार्गदर्शी एवं मित्र

सहेली माने एक सहारा बिना जिसके हम जी नहीं पाये

मुडकर देखें तो साथी एवं मित्र

हमारे साथ में ही रहेगें

दाएं बाएं आगे पीछे साथ

पूरी दुनिया भर साथ रहेंगे।

सही साथी एवं सच्चा मित्र हमें

छोडेंगे नहीं, साथ रहेंगे।

बैसाखी: इतिहास के दर्पण में

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

बैसाखी का पर्व हमारे वतन के लिए विशेष महत्व रखता है। इसका हमारे लिए सबसे अधिक महत्व इसलिए है क्योंकि, इसी दिन क्रूर अंग्रेज़ जनरल डायर ने जालियॉवाला बाग में हज़ारों बेकसूर भारतीयों को गोलियों से भून डाला था । उन भारतवासियों की शहादत्त की याद दिलाता है हमें बैसाखी पर्व । वैसे बैसाखी से जुड़ी अनेक कथाएँ और प्रसंग है, जिन्होंने इस पर्व को ऐतिहासिक बना दिया।

बैसाखी के समय आकाश में विशाखा नक्षत्र होता है । इसलिए इस माह का नाम बैसाख है । बैशाख माह में आने की वजह से इस त्यौहार का नाम बैसाखी पड़ा । इस दिन बड़े तीर्थों पर कुंभ का आयोजन होता है। बौध लोगों की मान्यता है कि बुद्ध ने बैसाखी के दिन ही बिहार में बोधगया में निर्वाण प्राप्त किया था।

हमारे प्रमुख पर्वों के संबंध में यह एक दिलचस्प तथ्य है कि ये फसलों से जुड़े होते हैं। इस समय देश के अधिकांश हिस्सों में रबी की फसल तैयार होकर खेतों में लहलहा रही होती है। हमारे देश के अनेक भागों में फसलों की कटाई बैसाखी के दिन शुरू की जाती है।

अतीत में बैसाखी के दिन जगह-जगह मेले लगते थे। इसमें लाहौर में लगनेवाले **रामचौतरा** मेले के संबंध में कहा जाता है कि राम उन दिनों वनवास में थे और सीता और लक्ष्मण के संग वनों में घूमते हुए राबी के तट पर पहुँचे थे। वह बैसाखी का दिन था। थककर चूर, पसीने से लथपथ दोनों भाई अपनी थकान उतारने केलिए राबी के शीतल जल में उतरे तो नदी में आगे बढ़ते हुए गए। बहुत समय गुजर गया। इधर देवी सीता किनारे उनके इंतज़ार में बेचैन ही रही थी । सीता ने नदी की देवी से प्रार्थना की कि दोनों भाइयों को सुरक्षित किनारे पहुँचा दो, ऐसा हुआ भी; तब से **रामचौतरा** नामक उस स्थान पर मेला लगने लगा।

नमामि गंगे ....

उज्ज्वल सुरेश
सुपुत्र रोहिणी के आर

गंगा (संस्कृत: *गङ्गा)* भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी है। यह देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं, बल्कि भारतीयों की भावनात्मक आस्था का प्रतीक भी है। भारत में माँ तथा देवी के रूप में गंगा नदी की आराधना की जाती है। वाराणसी, हरिद्वार और प्रयागराज जैसे पवित्र तीर्थ स्थल गंगा नदी के तट पर स्थित हैं। गंगा नदी को भारत की नदियों में सबसे पवित्र माना गया है और ऐसी मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। मृत्यु के बाद लोग मोक्ष प्राप्ति के लिए अस्थियों को गंगा में विसर्जित करते हैं और कुछ लोग गंगा के किनारे ही अपना जीवन त्यागने या अंतिम संस्कार करने की कामना करते हैं । गंगा के घाटों पर लोग पूजा-अर्चना करते हैं और ध्यान में विलीन हो जाते हैं। गंगाजल को भी पवित्र माना गया है। गंगा नदी के साथ अनेक पौराणिक कथाएँ जुड़ी हुई हैं। मिथकों के अनुसार ब्रह्मा ने विष्णु के पैर के पसीने की बूंदों से गंगा का निर्माण किया था तथा पृथ्वी पर आते समय शिवजी ने गंगा को अपनी जटाओं में रखा। त्रिमूर्ति के स्पर्श के कारण यह और पवित्र बनी। एक अन्य कथा के अनुसार राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ ने अपने पूर्वजों का अंतिम संस्कार कर, राख को गंगाजल में बहाकर उनकी भटकती आत्माओं की मुक्ति के लिए गंगा को पृथ्वी पर लाने का प्रण किया। इसके लिए भगीरथ ने ब्रह्मा की घोर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न

होकर ब्रह्मा गंगा को पृथ्वी पर भेजने के लिए तैयार हुए। तत्पश्चात् भगीरथ ने भगवान शिव से अपनी खुली जटाओं में गंगा के वेग को रोकने का निवेदन किया और भगवान शिव ने अपनी एक लट खोल दी, जिससे गंगा की अविरल धारा पृथ्वी पर प्रवाहित हुई। शिव के स्पर्श से गंगा और भी पावन हो गई और पृथ्वीवासियों के लिए श्रद्धा का केंद्र बन गई। पुराणों के अनुसार स्वर्ग में गंगा को मंदाकिनी और पाताल में भागीरथी कहा जाता है।

गंगा नदी उत्तराखंड स्थित उत्तरकाशी जिले के गंगोत्री से निकलकर बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है। यह मुख्य रूप से भारत में बहती हुई नेपाल और बांग्लादेश की सीमाओं के भीतर भी होती है और भारत के राज्यों में उत्तराखंड़, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और पश्चिम बंगाल से होकर बहती है।

भारत और बांग्लादेश में कुल मिलाकर 2525 किलोमीटर की दूरी तय करती हुई गंगा उत्तराखंड में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुन्दरवन तक विशाल भू-भाग को सींचती है। इस नदी में मछलियों की अनेक प्रजातियों के साथ-साथ दुर्लभ डॉलफिन भी पाए जाते हैं। यह कृषि, पर्यटन, साहसिक खेलों तथा उद्योगों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है तथा अपने तट पर बसे शहरों की जलापूर्ति भी करती है। इसके तट पर विकसित धार्मिक स्थल और तीर्थ भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विशेष अंग हैं। इसके ऊपर बने पुल, बाँध और नदी परियोजनाएँ भारत की बिजली, पानी और कृषि से सम्बन्धित जरूरतों को पूरा करती हैं। गंगा नदी पर निर्मित अनेक बाँध भारतीय जन-जीवन तथा अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

गंगा नदी पूरी दुनिया में अपनी शुद्धीकरण क्षमता के लिए जानी जाती है। इसके शुद्धीकरण की मान्यता के लिए वैज्ञानिक आधार भी है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस नदी के पानी में बैक्टीरियोफेज नामक वायरस होते हैं, जो बैक्टीरिया और अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं। नदी के पानी में ऑक्सीजन की मात्रा को बनाए रखने की असाधारण क्षमता है, जिसका कारण अभी भी अज्ञात है। लेकिन गंगा

के किनारे बसे घने औद्योगिक शहरों के नालों की गंदगी सीधे गंगा नदी में मिलने के कारण यह पवित्र नदी प्रदूषित हो गई। औद्योगिक और प्लास्टिक कचरे ने गंगा जल को अत्यधिक प्रदूषित कर दिया।

नमामि गंगे परियोजना : गंगा नदी की सफाई के लिए कई बार पहल की गई, लेकिन कोई भी संतोषजनक स्थिति तक नहीं पहुँच पायी। भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गंगा नदी में प्रदूषण पर नियंत्रण करने और इसकी सफाई का अभियान चलाया। उन्होंने 2014 में गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने और नदी को पुनर्जीवित करने के लिए 'नमामि गंगे' नामक एक एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन का शुभारंभ किया | इस योजना का क्रियान्वयन केंद्रीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प मंत्रालय द्वारा किया जा रहा है। इसी परियोजना के तहत भारत सरकार ने गंगा के किनारे स्थित कई औद्योगिक इकाइयों को बन्द करने का आदेश दिया। 'नमामि गंगे' परियोजना के फलस्वरूप पिछले दस वर्षो में पहली बार हर की पौड़ी में गंगा का पानी पीने के लायक बन गया है। 2014 में इस कार्यक्रम के तहत इन गतिविधियों के अलावा जैव विविधता संरक्षण, वनीकरण, और पानी की गुणवत्ता की निगरानी के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं। महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित प्रजातियों, जैसे – गोल्डन महासीर, डॉल्फिन, घड़ियाल, कछुए, ऊदबिलाव आदि के संरक्षण के लिए कार्यक्रम शुरू किए जा चुके हैं। इसी तरह 'नमामि गंगे' के तहत जलवाही स्तर की वृद्धि, कटाव कम करने और नदी के पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिति में सुधार करने के लिए 30,000 हेक्टेर भूमि पर वन लगाए जाएंगे। व्यापक स्तर पर पानी की गुणवत्ता की निगरानी के लिए जल गुणवत्ता निगरानी केंद्र स्थापित किए जाएंगे। लंबी अवधि के

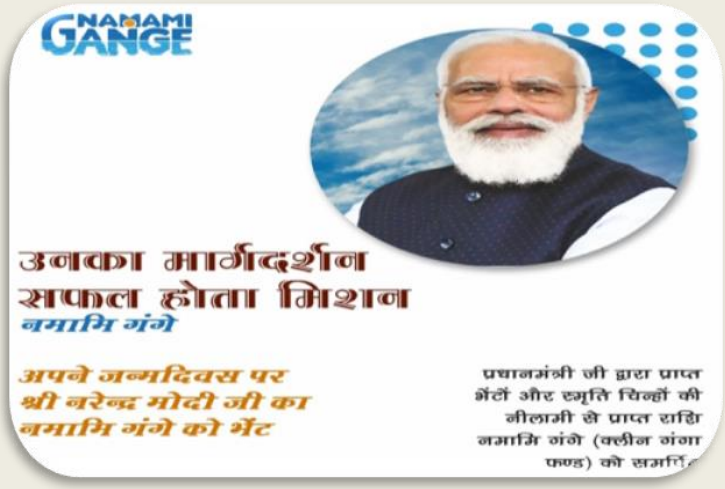

तहत ई-फ़्लो के निर्धारण, बेहतर जल उपयोग क्षमता और सतही सिंचाई की क्षमता को बेहतर बना कर नदी का पर्याप्त प्रवाह सुनिश्चित किया जाएगा। गंगा नदी की सफ़ाई इसके सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व और इसके विभिन्न उपयोगों के कारण अत्यंत जटिल है। विश्व में कभी भी इस तरह का जटिल कार्यक्रम कार्यान्वित नहीं किया गया है और इसके लिए देश के सभी क्षेत्रों और हरेक नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। हमारी सभ्यता, संस्कृति और विरासत के प्रतीक हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा को सुरक्षित करना हर भारतीय का दायित्व है।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021 – संक्षिप्त विवरण

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021 : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) के कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस का पालन किया गया और 14.09.2021 से 28.09.2021 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया।

कोविड़ 19 की परिस्थिति के मद्देनज़र राजभाषा विभाग के निदेशानुसार ऑनलाइन माध्यम से अधिकारियो/ कर्मचारियों के लिए इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

समारोह के दौरान कार्यालय परिसर में हिंदी भाषा में कुछ प्रमुख सूक्तियों के पोस्टर बनवाकर प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किए गए।

दिनांक 22.09.2021 को अधिकारियों के लिए "राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाडा समारोह-2021 के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची		
क्र.सं.	**नाम एवं पदनाम**	**पुरस्कार**
निबंध लेखन प्रतियोगिता		
प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम		
1	शिवेंद्र प्रताप सिंह, डी ई ओ	I
2	ज्योति, लेखापरीक्षक	II
3	अनुराग शुक्ला, लेखापरीक्षक	III
शाखा कार्यालय, तृशूर		
1	बिजू वी श्रीधर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	I
2	अनिल कुमार ई के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	II
3	सिंधू यू पी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	III
शाखा कार्यालय, कोच्ची		
1	लतिकेश्वरी, सहायक पर्यवेक्षक	I
2	विद्या मोहनलाल, वरिष्ठ लेखाकार	II
3	सेतुलक्ष्मी टी एस, सहायक लेखा अधिकारी	III
शाखा कार्यालय, कोट्टयम		
1	तंकच्चन टी, वरिष्ठ लेखाकार	I
2	सिंधू सी सी, सहायक लेखा अधिकारी	II
3	जिनू अब्रहाम, वरिष्ठ लेखाकार	III

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता		
प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम		
1	सुशीला पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	I
2	अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक	II
3	सजींद्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	III
शाखा कार्यालय, तृशूर		
1	सिंधू यू पी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रोत्साहन पुरस्कार
शाखा कार्यालय, कोच्ची		
1	सुलभा सी एस, पर्यवेक्षक	I
2	बेसिल ए ज़करिया, वरिष्ठ लेखाकार	II
3	आन्ड्रिया लूयिस, वरिष्ठ लेखाकार	III
शाखा कार्यालय, कोट्टयम		
1	सिंधू सी सी, सहायक लेखा अधिकारी	I
2	शोभा एस के, सहायक लेखा अधिकारी	II
3	जिनू अब्रहाम, वरिष्ठ लेखाकार	III
कथा रचना प्रतियोगिता		
प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम **हिंदीतर भाषी**		
1	रितिन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	I
2	शांति के, सहायक लेखा अधिकारी	II
3	उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	III
हिंदी भाषी		
1	प्रियंका चौरासिया, डी ई ओ	I
2	अंतमा, डी ई ओ	II
3	कल्पना यादव, लेखाकार	III

शाखा कार्यालय, तृशूर		
1	सिंधू यू पी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रोत्साहन पुरस्कार
शाखा कार्यालय, कोच्ची		
1	शोभना कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार	I
2	बिन्नी सी नायर, आशुलिपिक ग्रेड I	II
कविता रचना प्रतियोगिता		
प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम		
हिंदीतर भाषी		
1	उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	I
2	केवल कुमार मकवाना, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	II
3	जी सुभद्रा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	III
हिंदी भाषी		
1	प्रियंका चौरासिया, डी ई ओ	I
2	अंतमा, डी ई ओ	II
3	कुमार सौरभ, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	III
शाखा कार्यालय, तृशूर		
1	राजीव पी पी, लिपिक	I
2	आर्या एस, बहु कार्य कर्मी	II
3	सुदर्श के एस, बहु कार्य कर्मी	III
शाखा कार्यालय, कोच्ची		
1	लतिकेश्वरी, सहायक पर्यवेक्षक	I
2	आन्ड्रिया लूयिस, वरिष्ठ लेखाकार	II
3	विद्या मोहनलाल, वरिष्ठ लेखाकार	III
शाखा कार्यालय, कोट्टयम		
1	तंकच्चन टी, वरिष्ठ लेखाकार	I
2	सिंधू सी सी, सहायक लेखा अधिकारी	II
3	शोभा एस के, सहायक लेखा अधिकारी	III

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता		
प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम		
1	जोण तोमस के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	I
2	ज्योति, लेखापरीक्षक	II
3	कुलदीप कुमार, डी ई ओ	III
शाखा कार्यालय, तृशूर		
1	राजाकृष्णन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	I
2	अभिजित के नंबियार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	II
3	सुदर्श के एस, बहु कार्य कर्मी	III
शाखा कार्यालय, कोच्ची		
1	रोहित धामा, डी ई ओ	प्रोत्साहन पुरस्कार
पोस्टर डिज़ाइनिंग प्रतियोगिता		
प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, कोट्टयम		
1	तंपी पी माणी, पर्यवेक्षक	I
2	दीप्ती उण्णिकृष्णन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	II
3	केवल कुमार मकवाना, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	III
शाखा कार्यालय, तृशूर		
1	मधुसूदनन टी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	I
2	राजाकृष्णन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	II
3	सुदर्श के एस, बहु कार्य कर्मी	III
शाखा कार्यालय, कोच्ची		
1	विद्या मोहनलाल, वरिष्ठ लेखाकार	I
2	भास्करन ए के, पर्यवेक्षक	II
3	के पी सुरेष, पर्यवेक्षक	III

महिला सशक्तिकरण

एल प्रभा
सहायक लेखा अधिकारी

प्राचीन काल में, महिलाएं सम्मान और गरिमा के पात्र थीं। इस अवधि के दौरान, महिला ऋषि भी थीं और उन्हें उच्च सम्मान भी प्राप्त होता था। शाही घरों में भी महिलाओं को सम्मान दिया जाता था और उन्होंने निर्णय लेने और प्रशासनिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। समय के साथ भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज में बदल गया और महिलाओं को पुरुषों से कमतर मानने लगा। 19वीं शताब्दी के दौरान, महिलाओं की स्थिति सबसे खराब हो गई। उनके पास संपत्ति का लगभग कोई अधिकार नहीं रहा और विवाह कानून बहुत क्रूर थे।

समाज में अपनाई जानेवाली निम्नलिखित परंपराएं उनकी कमज़ोर परिस्थितियों को सही ठहराती हैं : धार्मिक वर्णनाओं के अनुसार, पत्नियां अपने मृत पतियों के साथ खुद को जला देती थीं। यह कृत्य "सती" के रूप में जाना जाता था। उन्हें बाल विवाह, सती प्रथा, परदा प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध, विधवा शोषण, देवदासी प्रथा आदि समस्याओं का सामना करना पड़ा था। हालांकि, लगभग सभी ऐसी पुरानी प्रथाएं लगभग गायब हो चुकी हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि महिलाओं को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनका अंत हो जाए। उन्हें शिक्षा तक पहुंच की अनुमति नहीं थी और उन्हें सामग्री के रूप में माना जाता था। इस प्रकार, महिलाओं की तुलना जानवरों के साथ की जाती थी और कम उम्र में उनकी शादी कर दी जाती थी। बाल विवाह से कुछ और समस्याएं भी हुईं जैसे कि बढ़ी हुई जन्म दर, महिलाओं का खराब स्वास्थ्य, महिलाओं और बच्चों की उच्च मृत्यु दर आदि।

कई समाज सुधारकों ने महिलाओं के लिए आवाज उठाई और इन सामाजिक बुराइयों के खिलाफ काम किया। भारत में महिला सशक्तिकरण का एक लंबा इतिहास रहा है। राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, आचार्य विनोभा भावे और ईश्वर चंद्र विद्यासागर आदि जैसे महान समाज सुधारकों ने अतीत में सती प्रथा और बाल विवाह जैसी भयानक प्रथाओं को समाप्त कर दिया और भारत में महिलाओं के उत्थान के लिए निरंतर काम किया।

सावित्री बाई फुले (1831-1897) : एक दलित महिला और भारतीय नारीवादी आंदोलन की एक अग्रणी, सावित्री बाई फुले ने भारत में महिलाओं के शिक्षा का समर्थन किया। वह देश की पहली महिला शिक्षक थीं जिन्होंने सभी जातियों की महिलाओं के लिए कई स्कूलों की स्थापना की थी। कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए 'बाल्हत्या प्रतिबन्धक गृह' की स्थापना की। उन्होंने बलात्कार के पीड़ितों के उत्थान और विधवाओं की हत्याओं को रोकने के लिए अन्य महिलाओं के साथ मिलकर काम किया।

ताराबाई शिंदे (1850-1910) : एक नारीवादी कार्यकर्ता के रूप में, वह हिंदू धर्मग्रंथों की अंतर्निहित पितृसत्ता की एक उत्साही आलोचक थीं और उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानताओं को उजागर करने के लिए बड़े पैमाने पर काम किया। उनका पहला प्रकाशित काम उनकी मराठी पुस्तक थी जिसका नाम "स्त्री पुरुष तुलाना" (पुरुषों और महिलाओं की तुलना) था, जिसे अक्सर आज तक भारतीय नारीवादी सर्किट के बीच उद्धृत किया जाता है क्योंकि इसे भारत में पहले आधुनिक नारीवाद ग्रंथों में से एक माना जाता है।

फातिमा शेख : 19 वीं शताब्दी की मुस्लिम महिला, फातिमा ने समाज के पितृ सत्तात्मक और रूढ़िवादी मानदंडों की अवहेलना करके अद्वितीय धैर्य दिखाया। इन समाज सुधारकों ने कई पारंपरिक, सत्तावादी और पदानुक्रमित सामाजिक संस्थानों पर हमला किया और भारतीय महिलाओं को उनकी बेड़ियों से मुक्त करने के लिए सामाजिक सुधार आंदोलन शुरू किए। हालांकि कई सुधारक मुख्य रूप से पुरुष थे, लेकिन सुधार आंदोलन का उद्देश्य भारतीय महिलाओं की स्थिति में सुधार करना था।

आज की महिलाएं घर पर अपने कर्तव्यों और कामों को संभालती हैं, अपने घर के बाहर एक कैरियर संभालती हैं, अपने बच्चों का पोषण करती हैं और अपने व्यवसायों के साथ अपने परिवार के जीवन को संतुलित करती हैं। आज अधिकांश शहरी परिवारों में यही दृश्य है। ग्रामीण महिलाएं और शहरी महिलाएं अक्सर अलग-अलग दुनिया में रहती हैं। शहरी क्षेत्रों में महिलाएं पश्चिमी कपड़े पहनती हैं और कभी-कभी कैरियर बनाती हैं और डॉक्टरों, प्रोफेसरों, पत्रकारों, शोधकर्ताओं और वकीलों के रूप में काम करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं मामूली पारंपरिक कपड़े पहनती हैं और पारंपरिक रूप से गांव और पारिवारिक जीवन से जुड़े कार्य को करती हैं।

ग्रामीण महिलाओं को मजदूरी कमाने वाले होने की संभावना कम होती है, और जब वे होती हैं, तो वे पुरुषों की तुलना में कम कमाती हैं। ग्रामीण महिलाएं अक्सर कम कुशल, कम उत्पादकता और लंबी अवधि तक काम करने, खराब काम करने की स्थिति और सीमित सामाजिक सुरक्षा के साथ कम या अवैतनिक नौकरियों में केंद्रित होती हैं। यहां तक कि अब भी कई गांवों में महिलाएं आम तौर पर अशिक्षित होती हैं और उनके जीवन में विकल्प कम होते हैं। उनके मूल्य को इस बात से मापा जाता है कि वे कितनी मेहनत करते हैं और वे कितने बच्चे पैदा करती हैं। जन्म के समय, उन्हें अक्सर उन परिवारों द्वारा निराशा के रूप में माना जाता है जो एक बेटा चाहते हैं। उसके बाद उन्हें अपने पिता, भाइयों या पतियों की संपत्ति के रूप में माना जाता है और उनकी अनुमति के बिना वे कहीं भी नहीं जा सकती हैं। विकसित दुनिया की तुलना में विकासशील देशों में सुंदरता और बुद्धिमत्ता शायद कम बेशकीमती होती है। कई देशों में एक अच्छी दुल्हन को एक ऐसी महिला माना जाता है जो "खाना पका सकती है, अपने पति की देखभाल कर सकती है और उसे बेटे दे सकती है"।

सरकार द्वारा महिलाओं, विशेषरूप से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अनिवार्य कदम उठाए जा रहे हैं। इस तथ्य को खड़ा करने के तहत कि सशक्त महिला अत्यधिक गरीबी को समाप्त करने की कुंजी है, उन्हें एक उज्ज्वल दुनिया के लिए लैस करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाता है। आज महिलाओं को कृषि, प्रौद्योगिकी, बैंकिंग और अन्य क्षेत्रों में पुरुषों के साथ समान पहुंच प्रदान की जा रही है। सरकार सामुदायिक स्वास्थ्य संगठनों के साथ शिक्षा और साझेदारी के माध्यम से महिलाओं के स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है, जिससे महिलाओं और उनके बच्चों को स्वस्थ रहने, जीवन को पूरा करने में मदद मिलती है।

महिलाओं का सशक्तिकरण न केवल इसलिए आवश्यक है क्योंकि महिलाएं लोग हैं और अकेले उस सरल तथ्य के लिए समान अधिकारों के हकदार हैं, बल्कि इसलिए भी कि महिलाओं में निवेश और सशक्तिकरण पूरी दुनिया के लिए क्षमता की बाढ़ को अनलॉक करता है। महिलाएं वैश्विक गरीबी के खिलाफ लड़ाई में एक गुप्त हथियार

हैं। वे एक अक्सर अप्रयुक्त संसाधन हैं जिनमें आजीविका, आर्थिक आउटपुट, उत्पादकता और मानव जीवन में सुधार करने की क्षमता है। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के पूर्व सचिव कोफी अन्नान ने कहा, "लैंगिक समानता को बढ़ावा देना न केवल महिलाओं की जिम्मेदारी है - यह हम सभी की जिम्मेदारी है।"

01.04.2021 से 30.09.2021 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची			
क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	धनेशन ए के	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2021
2.	बालकृष्णन पी (सं.1)	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2021
3.	रमेशन टी वी	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2021
4.	शोभा कुर्यन	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2021
5.	रतीदेवी एस नायर	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2021
6.	लिल्लि टी के	पर्यवेक्षक	30.04.2021
7.	अंबिका ए के	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2021
8.	विजयकुमार के सी	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2021
9.	अरविंदाक्षन के पी	डेटा प्रबंधक	30.04.2021
10.	श्रीदेवी टी आर	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2021
11.	वेलायुधन के सी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2021
12.	एलियाम्मा एम जे	पर्यवेक्षक	30.04.2021
13.	जॉण पी ए	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021
14.	राधाकृष्णन नायर वी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021
15.	वसंता सुदर्शनन	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021
16.	राजलक्ष्मी बी (सं.2)	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
17.	गीता ए	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
18.	सफिया पी के	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
19.	वर्गीस के ए	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
20.	शांता कुमारी एस	पर्यवेक्षक	31.05.2021
21.	शांती एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
22.	संतोष कुमार सी जी	पर्यवेक्षक	31.05.2021
23.	रमा देवी एस	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2021
24.	सेमसण सी ए	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021

सेवानिवृत्ति पर बधाई
सेवानिवृत्ति पर बधाई

25.	रवींद्रन के वी	पर्यवेक्षक	31.05.2021
26.	बीना चांडी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
27.	प्रेमराजन टी वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
28.	सुरेश बाबु टी के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2021
29.	सूसी योहन्नान	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021
30.	प्रदीप जी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
31.	गिरिजा जी	पर्यवेक्षक	31.05.2021
32.	पद्मजा टी पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
33.	वेणु ई वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
34.	मोहनन के टी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2021
35.	पोन्नप्पन के के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2021
36.	राजेन्द्र प्रसाद पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
37.	सुधीर कुमार वी	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2021
38.	प्रकाश के ई	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021
39.	चंद्रमोहनन के जी	पर्यवेक्षक	31.05.2021
40.	बालसुब्रमण्यन एन	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2021
41.	मुरुगन एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
42.	राधाकृष्णन एम वी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021
43.	राधाकृष्णन एम एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2021
44.	चंद्रांगतन के एन	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2021
45.	ललिता आर	पर्यवेक्षक	30.06.2021
46.	कृष्णन टी वी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2021
47.	दिनराज आर	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2021
48.	विजयन सी एस	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2021
49.	उदयकुमार के	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2021
50.	चंद्रिका बाबु	सहायक लेखा अधिकारी(तदर्थ)	30.06.2021

सेवानिवृत्ति पर बधाई

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

51.	गोपकुमार जी	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2021
52.	दिवाकरन के पी	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2021
53.	प्रसाद ई	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2021
54.	विनोदिनी वी के	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2021
55.	जयकुमार के पी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2021
56.	राजन के एस	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2021
57.	सुरेश सी	पर्यवेक्षक	31.07.2021
58.	वर्गीस के पी (सं.2)	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2021
59.	दिवाकरन पी वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2021
60.	अनिलकुमार एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2021
61.	सुंदर राज टी एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2021
62.	श्रीकुमार जी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2021
63.	सुमारत्नम आर	सहायक लेखा अधिकारी(तदर्थ)	31.07.2021
64.	षाजी पी डी	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2021
65.	मेरीकुट्टी जेम्स	पर्यवेक्षक	31.07.2021
66.	दिनेश कुमार कुन्नत	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2021
67.	लूईस के एम	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2021
68.	गोपालकृष्णन एस	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2021
69.	कृष्णन सी	सहायक लेखा अधिकारी	31.08.2021
70.	जोली कुरियन	पर्यवेक्षक	31.08.2021
71.	इंदिरा कुमारी वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.08.2021
72.	ज़ेवियर एम जे	सहायक लेखा अधिकारी	30.09.2021
73.	रवींद्रन आर टी	पर्यवेक्षक	30.09.2021
74.	लक्ष्मी पी आर	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2021
75.	जयकुमार वी	बहुकार्य कर्मी	31.05.2021
76.	मोहनन पी	लेखाकार	31.05.2021
77.	भगवती अम्माल जी	लेखाकार	30.06.2021
78.	अंबिका एस	लेखाकार	31.07.2021

सेवानिवृत्ति पर बधाई

प्रकाशक

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम – 695001